श्रीहरिः ।

राधास्वामीगप्पदर्पण

(प्रथम भाग)

राधास्वामीमतके ग्रन्थोंमें हिन्दू धर्म पर जो आक्षेप किये हैं, उसका उत्तर ।

जिसको

श्री स्वामी आलाराम सागर संन्यासी ने बनाया

तृतीयवार १०००	संवत् १९७२	मूल्य -)

Printed and Published by B. D. S. at the Brahma Press—Etawah.

राधास्वामी गप्प दर्पण ।

॥ ओम् ॥ त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ऋ० मण्ड० ७ सू० ५९ मं० १२ ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

इस पुस्तकमें राधास्वामी मतका खण्डन लिखा जाता है मूर्ति गंगादि तीर्थों देवी देवता राम कृष्णादि ईश्वर अवतारों कण्ठी माला तिलक और सम्प्रदायोंकी झूंठी निन्दा करनेसे यह मतभी आर्यमतहीमें शामिल है नाम जुदा रक्खा है। किन्तु राधास्वामी मतकी वार्तिक नामकी पोथी उसका भाग २ पृ० १५५ पं० १९ वीं में जिसका असल नाम बाबू शिवदयालसिंह खत्री आगरा निवासी था उसने लिखा है कि कलियुग के बादशाह सन्त हैं और राधास्वामी मतमें सन्त वही कहाते हैं जो कि राधास्वामी मतमें शामिल हो जाते हैं। परन्तु प्रत्यक्षादि प्रमाणोंसे साबित है कि कलियुग के बादशाह अंगरेज बहादुर हैं अंगरेज बहादुर को चाहिये कि इस बादशाह मतकी निगरानी करें क्योंकि इस बादशाही मत की हमने और भी शिकायत देखी है जैसे कि ता० १२ अप्रैल सन् १९०१ ईसवी का छपा एडवोकेट पत्र उसके पृ० ३ कालम ५ पं० १६ वीमें एक

लेख छपा है उसका सारांश वक्ष्यमाण रीतिसे हम द-
र्शाते हैं जैसे कि ५ वर्षके पहिले आगरामें एक बाबू
शिवदयालसिंह जी थे जिला देहली फरीदाबादमें उन
का विवाह हुआ था उनकी स्त्रीका नाम राधा था वह
राधा धूसिमल्ल खानदानमें उपजी थी रियासत वल्ल-
भगढ़ के स्कूलमें बाबू नौकर रहे थे बाद उसके बाबूजी
दीवान संपतरायसे मिले दीवान जी ने बाबू जीको
अर्जी नवीस बना दिया था तीन वर्ष तक बाबू अर्जी
नवीस बनें रहे वहांके नाहरसिंह राजा थे उनके पास
एक सैय्यद आये उनने राजाको अपने मतकीप्रशंसा सुनाई
उसको सुनकर वह राजा मुसलमान हो गये साथ ही
उसके बाबू शिवदयालसिंह भी मुसलमान होगये। यह
बात संवत् १९१३ की है फिर संवत् १९१४ में बलवा
उठा था अंगरेजों ने राजा नाहरसिंहको बागियोंमें शा-
मिल करके कतल कर डाला था परन्तु बाबू शिवदया
लसिंह मारे डरके भाग गये छिपकरके गुजर करने लगे
फरीदाबादमें रहने लगे एक मुसलमान लोहारके घरमें
डेरा जमा दिया बाद उसके दुर्गाप्रसाद जी को मिले
दुर्गाप्रसादजी दीवान राय पृथिवीसिंहके पुत्र थे दुर्गाप्र-

साद जी ने बाबूको अपना गुरु बना लिया जब बलवेका वक्त गुजर गया तो बाबू जी अपनी राधा स्त्रीको साथ लेकर आगरामें आ ठहरे यहांके लोग जो कि बिरादरी के थे उनने बाबू को जाति से बाहर कर दिया था फिर बाबू निराश हो कर वहां से चल पड़े परन्तु अपनी राधा स्त्री को आगरा ही में रहने दिया आप रियासत गवालियर चंबलनदी के कि-नारे तकियेमें रहने लगे पीछे बाबूकी राधा स्त्री वि-धवाके सदृश दुःखी होकर गुजर करने लगी एक रोज राय शालिग्राम राधाके पास आये उस राधाको हर तरहसे राय साहिब आराम देने लगे क्योंकि राधाका मकान राय शालिग्रामके घरके पास ही था संवत् १९३० के आरंभमें राय साहिबने राधासे उसके पतिका समा-चार पूंछा था राधाने राय साहिबसे कहा कि मेरा पति मुसलमान होगयाहै बिरादरीने उसको खारिज करदिया है इसको सुनकर राय साहिबने राधासे कौल करार किया कि तेरा पति मुसलमान हो गया है तो कुछ भी हर्ज नहीं हम सब हिन्दुओंको उसकी झूंठ खिलावेंगे इस प्रतिज्ञाके बाद रायजीने बाबू शिवदयालसिंहको तलब

करलिया राय साहिबने बाबूको कन्धेपर उठाकर उस को यमुना स्नान कराया और कहा कि शिवदयालसिंह परमेश्वर है इस बातको देख और सुनकर बहुत लोग बाबू शिवदयालसिंहके चेले हो बैठे प्रातःमध्यान्ह और आधीरात यह तीन वख्त रायजीने सभा लगानेकेलिये नियत करलिये रायजीका सरकारमें मान्य था उसी सबब से बहुत लोग सभामें जमा होने लगे ॥

एक बड़ा मकान था उसमें एक तखत रखवा दिया उसपर बाबू शिवदयालसिंहको बिठाना प्रारम्भ कर दिया बाबू जब भोजन खा चुकते थे और बाकी जूठन बचती थी उस को एकत्र करके सब सभा के लोग खाते जाते थे बाद उसके राधास्वामीमतकी किताबें बनानी प्रारम्भ करदीं राय शालिग्रामजीने जो कौल करार राधासे किया था उसको पूरा कर दिखाया बाबू शिवदयालसिंहकी उच्छिष्ट जो कि भोजनमें डाली जाती थी उन उच्छिष्टोंको हिन्दु खाने लगे इस लेखको एडवोकेट पेपर पर लिखके फिर एडीटर साहिब अपनी राय देते हैं कि यह बात ठीक नहीं परन्तु हम इसके पहिले भी इन बातोंको कहीं२ सुनचुके हैं उसीसे ज्ञात होता

है कि एडीटर, साहिबकी राय ठीक नहीं और जो हो बाबू शिवदयालसिंह जातिके खत्रिय थे और राय जालियाम जातिके कायस्थ थे बाबू शिवदयालसिंह नाम को लोप कर डाला उसके स्थानमें बाबूने स्वामी शब्द का आदेशकर दिया फिर स्वामी शब्दके साथ राधा शब्द को मिलाकर राधास्वामी मतको खड़ा कर दिया अं-गरेजों को चाहिये कि इस बादशाही मतसे जवाब त-लब करें कि राधास्वामी मत वाले संत कैसे कलियुगके बादशाह बने हैं हैं। अब इस मतकी पोथियोंकी समालो-चना करी जाती है जैसे कि पोथीवार्तिक भा० २ पृ० १२५ पं० १ से० उसीका भा० १ पृ० २ पं० १२ वींसे० उसी का भाग २ पृ० १५१ पं० ५ वीं से० पोथी सन्तमतके टि-कोजम पृ० ११ म० छेवें का उत्तर पोथी वार्तिक भा० २ पृ० १३४ पं० ३ से० उसीकी पृ० १५३ प० २० वींसे० पोथी सन्तसग्रह पहिली आवृत्ति पोथी वार्तिक भा० १ पृ० २४ प० ५ वींसे० उसी की पृ० ४१ प० ११ वीं से० इन सबका सारांश यह है कि जो तीन लोकका कर्त्ता रामहै उसने जीवोंको भोगोंमें फंसाया है वह जीवोंका मुद्दई है फिर हम उस दुःखदाई रामको क्यों मानें जीवोंको राम पा-पोंसे नहीं हटाता राम २ जपते उमर नष्ट हो जाती

है परन्तु विकार नष्ट नहीं होते नारदको राम मिला था परन्तु फिर भी चौरासीसे नारद न बचा राम २ नाम निष्फल है ॥

राम मरे रावण मरे कृष्ण मरे और कंस ।
जो उन मुर्दोंका स्मरण करे उसका डूबे वंश ॥

यह पोथी संतसंग्रह पहिली आवृत्तिका दोहा है। आजकल जो राम कृष्णादि अवतारोंका पूजन करते हैं वह स्त्री वगैराके आधीन हैं। पोथी वार्त्तिक भा० २ पृ० २६ पं० १ से० कहा है कि जिस नाम का निर्णय राधा स्वामीने किया हैं वह नाम वेदों और शास्त्रों में नहीं है इन रूलोंसे बाबू लालबुझक्कड़ जाना जाता है क्योंकि राम भोगों में नहीं फंसाता किन्तु राधास्वामी मतवाले खुद ही भोगोमें फंसते हैं। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है राम परमात्मा जीवोंका मुद्दई नहीं किन्तु राम परमात्मा जजमिसट है राम परमात्मा दुःखदाई नहीं किन्तु राधा स्वामी मतवालोंके कुकर्मानुसार राम परमात्मा फल देता है जो श्रद्धाभक्ति विश्वाससे राम नाम जपते हैं उनके विकार जरूर नष्ट हो जाते हैं आखिरको नारद जी भी आनन्दको प्राप्त हुए थे। राम कृष्णादि नाम वाले शरीर शुद्धसत्वगुण

प्रधान मायाका कार्य हैं उनका दर्शन अदर्शन होता है वह मुर्दे नहीं हुए किन्तु बाबू खुद मुर्दे हुए हैं यह आगे लिखेंगे बाबू शिवदयालसिंहके माता पिता राम कृष्णादि अवतारोंका ही स्मरण करते थे और वह सच्चे भक्त थे बाबूके रूलोंसे बाबूके माता पिता ही नरक सागरमें डूबे हैं हिन्दुमत निर्दोष है क्योंकि हिन्दुलोग ऐसेगन्दे रूलोंको पास ही नहीं करते जितने राम कृष्णादिका पूजन करते हैं वह सब स्त्री वगैरः के आधीन नहीं किन्तु राम कृष्णादिके हजारों उपासक विरक्त जितेन्द्रिय भी देखे जाते हैं। राधास्वामी मतमें एक भी विरक्त जितेन्द्रिय नहीं देखा जाता जो विरक्त जितेन्द्रिय है वह राधा स्वामीके मतजाल ही में नहीं फंसता बाबूने शिवदयालसिंह नामके स्थानमें स्वामी शब्दका आदेश कर दिया बाबूकी जोरूका नाम राधा था राधा नाम को अपने स्वामी नामके साथ मिला कर राधा स्वामी नाम अपना ही रख लिया जैसे सुना है कि जहांगीर बादशाहने सिक्का चलाया था उसमें अपना नाम रक्खा था परन्तु उसपर सब प्रजा प्रसन्न न हुई फिर बादशाह नेउसी सिक्केपर अपनी नूरजहां बेगमका नाम मिलादिया उसको देखके सब प्रजाके लोग फूलके ढोल हो बैठे वही

तमाशा बाबूजीका है केवल स्वामी नामपर चेले खुश न-
हुए किन्तु स्वामी नामसे राधा नाम मिलाने से चेले मारे
खुशी के तबले सरांगी बजाने लग पड़े बाबूने कहा कि
राधास्वामी ने जिस नामका निर्णय किया वह चार
वेदों और छै शास्त्रों में नहीं सो ठीक नहीं क्योंकि
(राधस्पते०) इस अथर्वण वेद के मन्त्र में राधा नाम
तो है परन्तु स्वामी नाम चारों वेद में कुत्ता के सींग
समान नास्ति है। वेदोंके निघण्टु कोषमें राधा नाम
धन का है धनाढ्य तो भंगी चमार वगैरः भी देखे
जाते हैं उनसे बाबू की कुछ विलक्षणता नहीं हो सक्ती
यद्यपि कृष्ण परमात्माकी स्त्रीका नाम भी राधा था
तथापि राधा नाम भागवतमें नास्ति है। खैर जो हो
उस हुई को ४ चार हजार वर्ष गुजर गये हैं बाबू
शिवदयालसिंह ने अपना नाम राधास्वामी रखके उसी
नामका निर्णय किया है उस से बाबू कृत नाम बना-
वटी है। पोथी वार्त्तिक भा० १ पृ० ९० पं० ६ वीं से०
बाबू ने गुरू की पहिचान के लिये वेदों की गवाही
लिख मारी है उससे बाबू जी पूर्वापर विरुद्ध झूंठी
हलफ दरोगी फांसीमें फंसे हैं क्योंकि बाबू जी लिख
चुके हैं कि जिस नाम का निर्णय राधास्वामीने किया

है वह नाम ही वेदोंमें नास्ति है इस रूलसे बाबू जी वेदों के विरोधी हैं ॥ परन्तु इलफदरोगी से बाबू के दोनों लेख झूंठे हैं ॥

पोथीवार्त्तिक भा० २ पृ० ११९ पं० १५ वीं से बाबू का रूल है कि ईंट पत्थरकी मूर्त्ति को भगवान् मान के पूजते हैं मालिक का मन्दिर नहीं बताते जहां हर वक्त घण्टे और शंख बजते हैं। उसी का भा० १ पृ० ५९ पं० १० वीं से बाबू जी कहते हैं कि अपने हाथ की बनाई चीजोंका पूजन करना नीच योनी नरकोंमें जाना है। उसीका भा० १ पृ० ५१ पं० १ से० लिखा है पत्थर तीर्थ व्रत यज्ञ होम रोजगार है। उसी का भा० १ पृ० ३३ पं० २ से कहा है कि जहां २ अवतार वगैरः हुए हैं वहां ही उनकी पूजा होती थी दूसरी जगह उनको कोई नहीं मानता। उसी का भा० १ पृ० ८२ पं० ९ वीं से बाबू का रूल है कि चार धाम और म-न्दिर वगैरः में मालिक का कुछ भी पता नहीं लगता। इत्यादि बाबू के रूलों का अब खण्डन सुनिये हिन्दु लोग मूर्त्ति को पत्थर वा भगवान् नहीं कहते किन्तु राम कृष्ण परमात्माकी मूर्त्ति कहते हैं पाषाणादि में मूर्ति का दर्शन अदर्शन होता है नास्ति से अस्ति अ-थवा अस्ति से नास्ति मूर्तिकी नहीं होती बाबूके मु-

लिकका मन्दिर गधा के सींग समान नास्ति है। हां बाबू के चेले जिस मकान में बैठते हैं वहां ही तवला सारंगी बजाने का प्रारम्भ कर देते हैं वहां ही घड़ी घण्टा शंख बजाते हैं उसी मकान को मालिक का मन्दिर कहते होंगे। बाबू के माता पिता वगैरः मूर्तिका पूजन करते थे वह नरकमें गये होंगे हिन्दुओंके माता पिता आदि मूर्तिके ध्यानसे मनको एकाग्र करते हैं जो निष्काम होकर तीर्थ यज्ञ होम वगैरः करते हैं उनका अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है यह वेदान्तका सिद्धान्त है तीर्थादिको रोजगार कहनेसे बाबू लालबुझक्कड़ भी हो सकता है। श्री रामचन्द्रजी अयोध्या में प्रकट हुये थे मथुरामें श्रीकृष्ण जी का प्रादुर्भाव हुआ था परन्तु उन का नाम ब्रह्माण्ड भर में सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा है क्योंकि वह सर्वव्यापक ईश्वरके अवतार थे जो श्रद्धा भक्ति विश्वाससे राम कृष्णादि की मूर्तिका ध्यान करते हैं उनके मनमें वही मूर्ति खड़ी दीखती है उससे मूर्ति ध्यान वाह्यमुखी पूजा नहीं। मूर्ति के आगे जो धूप दीप वगैरः दिये जाते हैं लड्डू पेड़ा रक्खे जाते हैं वहभी मूर्त्युपहित व्यापक राम कृष्ण नाम युक्त परमात्माही का सत्कार होता है बाबू जी

अज्ञानी थे उसीसे चार धाम वगैरः में वाबूको व्यापक राम परमात्माका ज्ञान नहीं होता था। पोथीवार्तिक भा० २ पृ० ११७ पं० १ से० लिखा है कि पांच शास्त्रोंकी पोल तो वेदान्तने खोली है परन्तु वेदान्त शास्त्र की पोल अब सन्त निकालते हैं पोथी सन्तमतके टिकोजन पृ० १९ प्रश्न २० वें में लिखा है कि मालिक सर्व व्यापक है खास मुकाम में भी रहता है राधास्वामीके दोहे पृ० १ पं० १२ वीं से० कहा है कि—

सन्तमता सब से बड़ा यह निश्चय कर जान।
सूफी और वेदान्ती दोनों नीचे मान ॥ १ ॥
सन्त दिवाली नित्य करें सत्य लोकके मांहि।
और मते सब कालके योंहीं धूल उड़ांहि ॥ २ ॥

पोथी वार्तिक भा० २ पृ० २२० पं० २२ वीं से लिखा है कि वेदान्ती आप को ब्रह्म मानते हैं वेदान्ती के ग्रन्थोंमें कर्मोपासना ज्ञान का नाम तक भी नहीं है। उसीका भा० १ पृ० ९८ पं० १५ वीं से० कहा है कि विद्या और ज्ञानसे मुक्ति नहीं हो सकती उसी का भा० १ पृ० १०५ पं० २ से० लिखा है कि आप को ब्रह्म मानने वाले कोठियां चलाते हैं मेलों में हाथी घोड़ा वगैरः पर बैठके शाही निकालते हैं क्या ऐसे लोग ब्रह्मज्ञानी हो सकते हैं?। उसीका भा० २ पृ० २२

पं० २ से बाबू कहते हैं कि वेदान्ती निर्मले संन्यासी उदासी वगैरः वेदादिके कैदी बन बैठे हैं। राधास्वामी कृत बचनों की पोथी पृ० ४६ पं० ११ वीं से लिखा है कि वेदान्ती आपको ब्रह्म समझ के दूसरे को तलाश नहीं करते दूसरे को वेदान्ती धोखा देते और गुमराह करते हैं इत्यादि लेखों से बाबू बुझक्कड़ ने वेदान्तियों की झूंठी निन्दा करी है। शंकराचार्यादि भी वेदान्ती थे खैर जो हो अब बाबू के उक्त रूलोंका खण्डन लिखा जाता है जैसे कि जब बाबू का मालिक सर्वव्यापक है तो एक देशी खास मुकामी नहीं हो सकता यदि खास मुकामी है तो वह सर्वव्यापक नहीं ठहर सकता यदि माया अन्तःकरण भेदसे खास मुकामी मानें तो वेदान्तियोंकी निन्दा करना गधाके सींग का गपोड़ा है जैसे पांच शास्त्रों की पोल वेदान्तियोंने खोली है वैसे ही राधा स्वामी मत के ढोल की पोल भी वेदान्ती ही खोलते हैं॥

(तावद् गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुका विपिने यथा। न गर्जति महाशक्तिर्यावद् वेदान्त केसरी)

इसका मतलब यह है कि जैसे जंगल में गीदड़ तब तक बोलते हैं कि जब तक केसरी सिंह नहीं

गर्जता केसरी सिंह के गर्जने से गीदड़ नेस्तनाबूद हो जाते हैं वैसे ही संसार रूपी जंगल है राधास्वामी वगैरहः सप मत गीदड़ हैं वेदान्त रूपी केसरी सिंहकी गर्जना सुनकर नेस्तनाबूद होते जाते हैं वेदान्ती सबसे ऊंचे ब्रह्म को अपना आप जानते हैं तभी ब्रह्म में राधास्वामी वगैरहः मत वस्तुतः कुत्ता के सींग समान नास्ति हैं वेदान्त में सोपान क्रम न्यायसे ज्ञानोपासना कर्म तीनों मानते हैं गद्य विद्या ज्ञानसे बाबूकी मुक्ति नहीं हुई तो बाबू अविद्या अज्ञानान्धकार में फसे हैं।

ज्ञान का अज्ञान से विरोध है कोठियां चलाने और शाही निकालने से ज्ञान का विरोध नहीं यह बात पदार्थ विद्या से सिद्ध हो चुकी है इस .वक्त राधास्वामी मत की सभा में जियादा स्त्रियां जाती हैं वेदान्ती वग़ैरः वेदादिके क़ैदी नहीं किन्तु वेदादि के वक्ता हैं वेदान्ती वगैरः का देहाभिमान नष्ट हो जाता है राधास्वामी मत वाले देहाभिमानी हैं उसीसे लालच देकर राधास्वामी मतकी तरक्की करते हैं आपको ब्रह्म जानना व मानना यथार्थ ज्ञान है आपको जीव मानना भ्रान्ति ज्ञान है अपने स्वरूप से भिन्न ईश्वर की तलाश का करना मत वालों का तमाशा है वेदान्ती

किसीको धोखा नहीं देते क्योंकि वेदादि प्रमाणों और युक्तियों से दृश्य पदार्थों को वेदान्ती लोग असत्य जड़ दुःख स्वरूप साबित करते हैं दृष्टा ब्रह्म को वेदान्ती लोग अपना स्वरूप और त्रिकाल अबाध जानते हैं राधास्वामी मत वाले अपने से भिन्न दूसरे को तलाश करते हैं अंधगो लांगूलन्याय से राधास्वामी मत वाले ही धोखेका जाल फैला रहे हैं उसीसे राधास्वामी मत वाले ही धोखेबाज हैं डाक्टरी से साबित है कि एक दूसरेकी जूंठन खानेसे रोग पैदा होता है परन्तु राधा स्वामी मत वाले झूंठी चीज खाते हैं वेदान्तियोंकी झूंठी निन्दा करने से बाबू का मतलब यह है कि जीव कभी परमेश्वर नहीं हो सकता। परन्तु उसके विरुद्ध राधा स्वामी वचनों की पोथी पृ० ५२ पं० ६ वीं से उसी की पृ० ६६ पं० १२ वीं से उसी की पृ० २३ पं० ११ वीं से उसी की पृ० ४५ पं० ८ वीं से उसी की पृ० ५१ पं० १८ वीं से बाबू के रूलोंका मतलब यह है कि जो अभ्यास करते वह खुद ही ब्रह्म खुदा और राधास्वामी हो जाते हैं परन्तु हलफदरोगीसे सर्व लेख झूंठे हैं मालूम होता है कि इस मत में राधास्वामी ही को ब्रह्म और खुद खुदा लिखा है राधास्वामी से भिन्न इस मत

में ब्रह्म वा खुद खुदा गधा के सींग समान नास्ति है।
पोथी वार्तिक भा० २ पृ० ३८ पं० १५ वीं से उसी का
भा० १ पृ० ३९ पं० ११ वीं से उसका भा० २ पृ० १९८
पं० ४ वीं से उसी का भा० २ पृ० १ पं० ८ वीं से उसीका
भा० २ पृ० १३ पं० ८ वीं से उसी का भा० २ पृ० १५४
पं० ६ वीं से उसी का भा० २ पृ० १४८ पं० १५ वीं से
बाबू जी लिखते हैं कि गुरू नानक का मत चले को
सात सौ वर्ष गुज़रे हैं गुरू नानक विचौलिये थे वि-
द्वान् गुरूसे संशय नष्ट नहीं हो सकते जो गुरू नानक
के घर में हैं वह ग्रन्थ की पोट बांध रखते हैं आरती
उतारते हैं दण्डवत् करते हैं परन्तु ग्रन्थसे नाम चित्त
आवे इतनी आवाज़ भी नहीं निकल सकती ग्रन्थ के
पढ़ने से कुछ भी नहीं मिलता ग्रन्थ गुरू भी नहीं हो
सक्ता क्योंकि वह जड़ है खुद नहीं बोल सकता जिससे
उदासी काशी में पण्डितों के गुलाम जा बनते हैं।
बाबू के यह रूल भी पूर्वापर विरुद्ध झूंठी इलफदरो-
गी से भरे हैं क्योंकि आगे बाबू के रूलों से ही राधा-
स्वामी नाम शब्द का सिद्ध होगा गुरू नानक का मत
चले को सवा चार सौ वर्ष गुजरे हैं उससे बाबू झूंठा
है क्योंकि गुरू नानक का मत चले को बाबू ने सात

सौ वर्ष लिख दिये हैं परन्तु गुरू नानक का वेदोक्त मत है इस बातको हमने गुरू नानक मत मरडन में साबित कर डाला है दयानन्द मिथ्यार्थ प्रकाशमें देख लीजिये गुरू नानक बिचौलिये नहीं थे किन्तु वह हिन्दू धर्मको रक्षाके लिये ईश्वरके अवतार थे हां राय शालिग्राम बिचौलिया हो सक्ते हैं क्योंकि वह विद्या-हीनों को गप्प राधास्वामी मतमें फंसा गए हैं। संशय विद्वान् गुरू ही से नष्ट हो सकते परन्तु बाबू खुद ला-लबुझक्कड़ थे उस से दूसरों के संशय भी नष्ट नहीं कर सक्तथे ग्रंथकी आरती उतारने और दण्डवत् करनेसे पर-मात्मा ही का सत्कार होता है क्योंकि परमात्मा ग्रन्थ में भी व्यापक है ग्रन्थका पाठ करने से धर्मात्मा लोग दक्षिणा भी दे जाते हैं निर्मले उदासी वगैरः प-ण्डितोंसे पढ़कर दोषी नहीं हो सकते किन्तु पढ़कर विद्वान् हो जाते हैं बाबू भी पण्डितोंसे पढ़ लेते तो लालबुझक्कड़ कभी न रहते ग्रंथ पढ़कर ब्रह्मज्ञान द्वारा मुक्तिका लाभ भी हो सकता है उसीसे ग्रंथ भी गुरू हो सकता। किन्तु राधास्वामी की रची पोथी पृ० ५०पं०३ सेतथा पोथी वार्त्तिक भा० २ पृ० ५६ पं०९ वीं से और

राधास्वामीके वचनोंकी पोथी पृ० १२ पं० १९ वीं से उसी की पृ० २ पं० १२ वीं उसी की पृ० ५ पं० ११ वीं से साबित हो चुका है कि राधास्वामी मत वाले जीव सत्पुरुष ही की अंश हैं पोथी वार्तिक भा० २ पृ० ७७ पं० १० वीं से सुरत ही को शब्द का अंश कहा है इन सूत्रों से भी बाबू जी बुझक्कड़ हैं क्योंकि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से साबित है कि अंश अंशी भाव साकार सावयव पदार्थों में हो सक्ता है निराकार निरवयव पदार्थोंमें अंश अंशी भाव कुत्ता के सींग समान नास्ति हैं। यदि राधास्वमी मत वाले जीव और राधास्वामीको सत्पुरुषका अंश माने तो सत्यपुरुष अंशी होगा अंशी कार्य्य और अंशं कारणहैं कारण बाप और कार्य पुत्र होता है उस से सत्य पुरुष पुत्र और राधा स्वामी मत वाले जीवतथा राधा स्वामी सत्पुरुष के बाप होंगे परन्तु सत्पुरुष और इस मत के जीव तथा राधास्वामी साकार सावयव होने के कारण छिन्न भिन्न होते २ गधाके सींग समान मिथ्या हो सक्ते हैं। यदि उनको निराकार निरवयव माने तो उनमें अंश अंशी भाव कुत्ताके सींग समान नास्ति ही सक्ता है उभयपाशारज्जु न्याय से राधास्वामी मत वालों का छूटना नहीं हो सक्ता यदि घटाकाश मठाकाश

के उदाहरण से अंश अंशी भाव माने तो राधास्वामी मत खाकमें जा मिलेगा किन्तु वेदान्त मत ही शेष रहेगा सन्त मत के टिकोजम पृ० १ प०३वें से लिखा है, कि शब्द आकाश का गुण है और साथ ही आकाशकी उत्पत्ति लिख मारी है उससे शब्द भी उत्पत्ति वाला है। फिर वचन राधास्वामी का पृ० १३ पं० ६ वीं से लिखा है कि शब्द ही राधास्वामी है इस रूल से भी राधास्वामी रूपी शब्द उत्पत्ति नाश वाला और जड़ है पोथी वार्त्तिक भा० २ पृ० ९१ पं० ५६ से शब्द का नाम ही उपदेश लिखा है उस रूल से ग्रन्थ साहिब पर आक्षेप करना भी गधा के सींग का गप्प है, राधास्वामी का निज उपदेश पृ० ४३ पं० १३ वींसे लिखा है कि जिसने शब्दको पकड़ा है वही साधु है बाबू का यह रूल भी हलफदरोगी रूपी गन्दगी से भरा है क्योंकि बाबू का यह भी रूल है कि ग्रन्थ से कुछ नहीं मिलता ग्रंथ भी शब्द स्वरूप अनुभव सिद्ध है। फिर उसी को पृ० १८ पं० १ से बातिल कर डाला है कि राधा और स्वामी यह दोनों एकही हैं इस रूल से भी बाबू लाल बुझक्कड़ है क्योंकि जब राधा और स्वामी इनके वाच्य में एकता करें तो राधाका वाच्य

स्त्री की आकृति है स्वामीका वाच्य मनुष्यकी व्यक्ति है स्त्री के अंगोंसे मनुष्यके अंग विलक्षण हैं उनकी एकता आकाश पुष्पके समान नास्ति है। यदि स्त्री पुरुष की व्यक्ति रहित चेतन से एकता करें तो राधास्वामी मतवालों को वेदान्तियों के चेले होना पड़ेगा यदि राधा और स्वामी इन दोनों शब्दों ही को एक कहें तो पदार्थ विद्या से विरोध होगा क्योंकि राधा शब्द में रकार धकार और दो अकार यह चार अक्षर हैं स्वामी शब्द में सकार वकार मकार ईकार और आकार यह पांच वर्ण हैं इस हिसाब से राधास्वामी दो शब्दों में ९ अक्षर मिले हैं ९ अक्षरोंका मिलाप बाप और मिलापका कार्य राधास्वामी नाम पुत्र है नौ अक्षरोंका मिलाप रूपी बाप न होवे तो राधास्वामी दो नाम पुत्र भी कूर्म्म रोमके समान नास्ति हो सक्ते हैं। अथवा रकारादि नौ अक्षरों के नौ मिलाप हैं उनसे राधास्वामी नाम रूपी पुत्रके नौ बाप भी होसक्ते हैं। अथवा रकारादि नौ अक्षरों के समुदाय का नाम ही राधास्वामी है उससे राधास्वामी रूपी पुत्र के नौ अक्षर रूपी नौ बाप भी होसक्के हैं नौ अक्षरोंके नौ मिलाप नष्ट होनेसे राधास्वामी नाम भी गधाके सींगका

गपोड़ा हो सक्ता है बाबूके रूलसे आकाशकी उत्पत्ति सिद्ध हो चुकी है और आकाशका गुण ही शब्द सा-बित हुआ है (श्रोत्रोपलब्धिर्बुद्धिनिर्ग्राह्यः प्रयोगेणाभिज्वलित आकाशदेशः शब्द) इस पतञ्जलिके रूलसे भी आकाशका गुण शब्द है उत्पत्ति वाला होनेसे आ-काश नष्ट भी हो सकता है उससे भी राधा स्वामीरूपी शब्द सत्यानाशी है राधास्वामी नौ-वर्णोंको एक कहने से बाबू जी सर्वथा लाल बुझक्कड़ हैं ॥

बूझै २ लाल बुझक्कड़ और न बूझै कोय ।
थोड़ा २ सबको दीजे गड्डमगड्डा होय ॥

वही रचना बाबूजी की है राधास्वामी नाममें नौ शब्द हैं क्योंकि न्याय रीतिसे प्रत्येक वर्णका नाम भी शब्द हो सक्ता है रकारादि में जो रकारत्वादि जाति हैं उनसे भी रकारादि नौ शब्द ही सिद्ध होते हैं क्यों-कि रकारादि नौ शब्दोंकी अवच्छेदक रकारत्वादि नौ जाति हैं उससे नौ शब्दों को दो शब्द लिखना भी कुत्ता के सींग समान झूठा है। केवल राज नीति की विद्या पढ़कर मतमतांतरों में हस्तक्षेप करना बाबू जी का लड़कपन है। "बिच्छूको न मन्त्र पास उरग बिल डारे हाथ॥ तरियो चाहे सागरको डूबे गोखुरमें,,॥ यही लीला

बाबू जी है राधास्वामी का वचन २५ पृ० २० प० १९वीं से० लिखा है कि राधास्वामी मतकी पोथीको पढ़ो राधास्वामी नामको फैलाओ उसका स्मरण करो इनरूलोंसे बाबू भी लाल बुझक्कड़ हैं क्योंकि जब पदार्थ विद्यासे राधास्वामी नाम ही गधाके सींग समान झूठा सिद्ध हो चुका है तो उसके स्मरण और फैलानेसे भी कुछ नहीं मिल सकता। पोथी वार्त्तिक भा०२ पृ० ५९ प० ३ से कहा है कि शब्दद्वारा जीव बन्धनमें पड़ा है इस रूलरूपी तलवारसे भी राधास्वामी मतकी गप्परूपी गर्दन ही कतल होचुकी है क्योंकि शब्दही को यह लोग राधास्वामी मानबैठे हैं पूर्वोक्त रीतिसे राधास्वामी शब्द ही नास्ति है, उससे शब्दद्वारा जीव बन्धनमें नहीं पड़ सकता अथवा राधास्वामी मतवाले जीव ही जन्ममरण रूपी बन्धनोंमें पड़ सकते हैं क्योंकि वह राधास्वामी जड़ शब्द ही का स्मरण करते हैं। पोथी वार्तिक भा०२पृ० ८४ प० ४ से बाबू जी ने रूल पास किया है कि जब वेद वगैरा को सन्त खण्डन कर डालेंगे तो बाद उसके अपना ऊंचा मत कहेंगे इस रूलसे भी बाबू जी अज्ञानी और हठी साबित होते हैं यदि बाबू जी कुछ संस्कृत विद्या पढ़ लेते तो वेदके अर्थ को भी जानजाते

अभिप्राय यह कि वेद नाम यथार्थ ज्ञान के साधनका है जो जैसा पदार्थ हो उसको वैसा ही जानना यथार्थ ज्ञान कहाता है जैसे 'दिन को दिन जानना यथार्थ ज्ञान है परन्तु रात्रि को दिन वा दिन को रात्रि जानना भ्रान्ति ज्ञान है बाबू के रूलोंही से बाबूकी कलई खुल पड़ी है क्योंकि बाबूने राधास्वामी शब्दहीको सब से ऊंचा मत कहा है परन्तु युक्ति से राधास्वामी शब्द ही वन्ध्या स्त्री का कुमार साबित हुआ है यद्यपि वेद भी शब्द स्वरूप है तथापि हिन्दु लोग वेद को परमेश्वर नहीं कहते उस से हिन्दुमत निर्दोषहै॥

राधास्वामीका वचन ३२ पृ० १८ पं० २ से कहा है कि राधास्वामी का ध्यान धारणकरो इस रूलसे भी बाबू जी निरे लालबुझक्कड़ हैं क्योंकि बाबू के रूलोंसे शब्द ही राधास्वामी है शब्द भी साकार निराकार भेदसे दो प्रकार का है जो उच्चारण होता है वह निराकार और जो पुस्तक पर है वह साकार है यदि सूक्ष्म विचार किया जावे तो जो वाणी से उच्चारण होता है वह शब्द भी सूक्ष्म आकार रखता है परन्तु दोनों प्रकार का शब्द ही जड़ और मिथ्या है उस से राधास्वामी शब्द का ध्यान भी खर के सींगकी संख्या के

समान व्यर्थ है रामकृष्णादि मूर्त्ति के ध्यान का खण्डन करना और राधास्वामी नाम का ध्यान बतलाना उस से भी बाबू जी बुभक्कड़नाथ हैं। उसी की पृ० ३५ पं० ६ वीं से शब्द ही को नाद आवाज़ गैब बड़े नामों से लिखा है, उसी की पृ० ३६ पं० १ से आवाज को चेतन स्वरूप लिख मारा है और कहा है कि आंखों के ऊपर ध्वन्यात्मक शब्द है वैखरी वाणी वर्णात्मक शब्द है जो मुख से निकलता है वह मध्यमा शब्द है धिक्! बाबू की शब्द विद्याको न जाने बाबू की शब्द विद्या का कौनसा नमूना है। क्योंकि भेरीदण्ड के संयोग से भेर्यपहित आकाश में जो शब्द होता है वह ध्वन्यात्मक कहाता है आंखों के ऊपर शब्द ही नास्ति है जो मुख से शब्द बोला जाता है उसीका नाम वैखरी है, उसको मध्यमा लिखने से भी बाबू निर्बुद्धि हो सक्ते हैं शब्द को चेतन लिखना भी बाबू की हलफदरोगी है क्योंकि शब्द को बाबू जी जड़ भी लिख चुके हैं हलफदरोगी से बाबू के दोनों लेख झूठे हैं॥

पोथी वार्त्तिक भा० १ पृ० ८६ पं० २ से कहा है कि भाखसही लोग राज्य मांगते हैं परन्तु यह भी झूठी हल्फदरोगी है क्योंकि बाबू जी खुद ही बादशाह का

होते हैं उसी से बाबू जी खुद ही पाखण्डी हैं। राधा-स्वामी निज मत की पोथी पृ० ३८ पं० १२ वीं से शब्द को आकाश की जान लिखा है सो भी ठीक नहीं क्योंकि शब्द आकाश का गुण है, उसी की पृ० ४० पं० २२ वीं से कहा है कि जो ब्रह्माण्ड के परे से ध्वनि आती है वही ध्वन्यात्मक शब्द है जो लिखा जाता है वह वर्णात्मक है परन्तु यह भी झूंठी हलफदरोगी है क्योंकि पूर्व लिखे रूल से आंखों के ऊपर रहने वाला शब्द ध्वन्यात्मक और वैखरी वाणी वर्णात्मक साबित हुआ है न जाने राधास्वामी कौन से शब्द का नाम है खैर जो हो उसी की पृ० ६७ पं० ३ से लिखा है कि राधास्वामी का ध्यान करने वाला अमर हो जाता है बाबूका यह रूलभी धोखेकी टट्टी हैं क्योंकि राधास्वामी बाबू जी खुद मर गये हैं राधास्वामी नाम भी वस्तुतः नेस्तनाबूद है उसी से बाबू के चेले भी अमर नहीं होसक्ते उसी की पृ० १ पं० ५ वीं से लिखा है कि राधास्वामी मत सर्व मतों की जान है यह रूल भी सर्वथा मिथ्या है क्योंकि मत करोड़ों वर्षों से चले आते हैं राधास्वामी नाम वाला मत सन् ५७ के गदर के बाद चला है जिस नाहरसिंह राजा के बाबू नौकर

थे वह राजा भी बागी होने के जुल्म से कतल होचुका है उससे उसी राजा की नौकरी करने वाले बाबू शि· बदयालसिंह भी राज्यभक्त नहीं हो सकते राधास्वामी· शब्द जड़ होने के कारण भी सर्व मतों को जान नहीं हो सकता बहुत लोग शंका करते हैं कि राधास्वामी मत में एम० ए० बी० ए० पास करने वाले ज्यादा जाते हैं उनके देखा देखी हजारों शामिल हो जाते हैं इस में कौन सा कारण है तो उत्तर यह कि जो केवल गवरमिंट कालिज में अंगरेज़ी पढ़ते हैं उनको राजनीतिका ज्ञान तो हो सकता है परन्तु धर्मशास्त्र देखे विना धर्म का ज्ञान नहीं हो सकता उसीसे एम० ए० बी० ए० इस गप्प मतमें आ फंसते हैं दूसरे नौकरीके लालचसे शामिल हो जाते हैं तीसरे मारे भूंखके इस गप्प मतमें मिल जाते हैं चौथे अपनी वेवकूफी से इस मिथ्या मत में जाते हैं निर्लोभी धर्म के ज्ञाता विद्वान् वगैरः राधा स्वामी मतमें एक भी नहीं जाते। उसी को पृ० १२ पं० १७ वीं से कहा है कि स्थूल सूक्ष्म और कारण यह तीनों शरीर सुरत के ऊपर चढ़े हुए हैं इस कूल से मालूम होता है कि राधास्वामी मत वाली सुरत भी कोई

घोड़ी वा गधी किम्वा ऊंटनी अथवा रेलगाड़ी होगी कि जिसके ऊपर तीनों शरीर चढ़े बैठे हैं बाबू जी नें शब्द ही को सुरत लिखा है परमार्थ से शब्द रूपी सुरत और तीन शरीर ही नास्ति हैं ॥

अस्थिस्थूणां स्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम् ।
चर्मावनद्धं दुर्गन्धिपूर्णां मूत्रपुरीषयोः ॥
जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम् ।
रजस्वलमनित्यंच भूतावासमिमंत्यजेत् ॥

इत्यादि प्रमाणों से भी शरीर मिथ्या है उसी को पृ० २४ पं० ३ से लिखा है कि जब मौत का वक्त आता है तब गुदा चक्र से आंखों तक धीरे २ प्राण आते हैं फिर वहां से सुरत निकल जाती है इस रूल से यह नहीं ज्ञात होता कि राधास्वामी मत वाली सुरत कौन से जङ्गल की चिड़िया है जो कि मौतके वक्त गुदा चक्र से धीरे २ आंखों तक प्राणोंको पहुंचा देती है, राधास्वामी मत केरूलों से इतना तो जाना जाता है कि इस रूलमें शब्द ही का दूसरा नाम सुरत है उसको निकलने अथवा निकालने का ज्ञान ही कुछ नहीं हो सकता पदार्थ विद्यासे वा प्रत्यक्षादि प्रमाणों से साबित होता है कि प्राणों के रहनेका स्थान हृदय देश है परन्तु बाबू

बुभक्कड़ ने प्राणों को गुदा चक्र में जा दाखिल किया है यदि सूक्ष्म विचार किया जावे तो योगशास्त्र में गुदाचक्र ही कोई नहीं हां मूलाधारचक्र तो योगशास्त्र में लिखा है यदि कुछ दिन बाबू शिवदयाल जी और भी मुकाम रखते तो लिङ्ग चक्र का रूल भी पास कर लेते आठ चक्रोंका सरक्यूलर जारी कर देते. पोथी वार्त्तिक भा० १ पृ० ४५ पं० १० वीं से साफ लिखा है कि आगे गुदाचक्र ही से योगाभ्यास शुरू होता था गुदा के नीचे तक छै चक्रों के नाम नहीं लिखे उस से निश्चय होता है कि बाबू का चक्रों का ज्ञान भी नहीं था चिक् ! बाबू की योग विद्या को सुना जाता है कि एक नाड़ी को मदन कर राधास्वामी मत वाले आधा घण्टा मूर्छा में आ जाते हैं वही इस मतमें योगविद्या होगी उस से बहुत लोग पागल और बीमार हो जाते हैं मर भी जल्दी जाते हैं । पोथी वार्त्तिक भा० २ पृ० १६० पं० ७ वीं से लिखा है कि पण्डित लोग जीवोंको पत्थर पानी में लगा देते हैं वर्णात्मक शब्द को बतलाते हैं ध्वन्यात्मक शब्द नहीं बतलाते सन्त ध्वन्यात्मक शब्द बतलाते हैं इस रूलसे ज्ञात होता है कि बाबूको खुशकी रोग था यदि ऐसा न होता तो इतने गपोड़े कभी न हांकता ॥

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणेगविहस्तिनि ।
शुनिचैवश्वपाकेच पण्डिताः समदर्शिनः ॥

इस गीता वचन और—

आत्मज्ञानंसमारम्भस्तितिक्षाधर्म्मनित्यता ।
यमर्थान्नापकर्षन्ति सवैपण्डित उच्यते ॥

इस वचनसे आत्मज्ञानीका नाम पण्डित है आत्मज्ञानी किसी को भी पत्थर पानीमें नहीं लगाते किन्तु विक्षेप दोष नष्ट करनेके लिये पण्डित लोग राम कृष्णादिकी मूर्तिका ध्यान बतलाते हैं मल दोष को नष्ट करने के लिये गंगादि तीर्थ स्नान बतलाते हैं मूर्तिके ध्यानसे भी मूर्त्यवच्छिन्न चेतन ही का चिन्तन होता है गङ्गा जलादिके ध्यानसे गंगा जलादि अविच्छन्न ब्रह्मचेतनकाही चिन्तन होता है विना जलके राधास्वामी मत ही धूलि में मिल जा सकता है बाबू शिवदयाल सिंह और राधाकी मूर्ति भी राधास्वामी मतवाले बनवाते हैं उनको कागज स्याही अथवा पत्थर नहीं कहते किन्तु उनको राधास्वामी जानकर ध्यान करते हैं पण्डित लोग सत्यवादी हैं उसीसे वर्णात्मक शब्द

को बताते हैं बाबूजी सन्त लालबुझक्कड़ थे उसीसे ध्व- न्यात्मक शब्द कहते थे कानमें उंगली घुसेड़े से जो गर्जन होता है उसको इस मतवाले अनहद शब्द क- हते हैं परन्तु उसको हर कोई कान में उंगली देकर सुन सकता है एक नगरमें हमने एक राधास्वामी मत वाले सन्तको देखा था वह प्राण रोकने लगा था पर- न्तु मलद्वारसे उस का ऐसा धड़ाके में अपानवायु निकल खड़ा हुआ जैसे प्रलय काल के मेघ होते हैं धिक् ! राधामत वालोंके ध्वन्यात्मक शब्दको यदि सूक्ष्म विचार किया जावे तो ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक दोनों प्रकारके शब्द ही आकाश का गुण हैं जैसे आ- काश गुणी कहीं आता जाता नहीं वैसेही आकाशका गुण शब्द भी कहीं आता जाता नहीं यदि कहो कि टेलिग्राममें शब्दका आना जाना प्रतीत होता है वही ध्वन्यात्मक शब्द है सो भी ठीक नहीं है क्योंकि जैसे तड़ागमें एक पत्थर फेंका जावे तो उस से एक लहरी उठती है उस लहरीसे दूसरी उससे तीसरी आदि लहरी उठती हैं किन्तु अन्तकी लहरी किनारेके साथ जाकर लगती है वैसे ही जहांके टेलिग्राम शुरू होता है वहां

से पहिले ध्वन्यात्मक शब्द उठता है उससे दूसरा दूसरेसे तीसरा वगैरः शब्द उठते चले जाते हैं किन्तु अन्तका शब्द ही तीन हजार कोस पर सुनाई पड़ता है उस ध्वन्यात्मक शब्दको भी तार बाबू सुनाते रहते थे मुक्ति सुखका लाभ उससेभी नहीं हो सकता था राधास्वामी मतवाले बाबू यदि सूक्ष्म विचारसे देखें तो उन की नाभिमें ही वायुके संयोग से राधास्वामी शब्द उठता है उस शब्दका प्रादुर्भाव वाणीमें नहीं हो सकता किन्तु राधास्वामी नाममें रकारादि जो वर्ण हैं वह क्रमसे प्रगट होते हैं जैसे कि महीन कागजों की बीस तहें बनाकर उसमें से सुईको निकालें तो प्रथम क्षणमें सुईका एक पड़देके एक ओर संयोग होता है द्वितीय क्षणमें वह सुई पड़देके भीतर जा घुसती है तृतीय क्षणमें उस पड़देके पार हो जाती है एक पड़दे में से सुई के पार होनेमें तीन क्षण गुजर जाते हैं इस हिसाब से बीस पड़दोंके पार होते तक साठ क्षण गुजर जाते हैं परन्तु विद्याहीन मनुष्यको मालूम होता है कि एकही क्षणमें सुई पार हो गई है वैसे ही राधास्वामी नामका उच्चारण करते हैं तो प्रथम क्षणमें रकार अक्षरका वाणीमें प्रादुर्भाव होता है द्वितीय क्षण

में रकारकी स्थिति होती है जो रकार की स्थितिका
क्षण है उसी क्षणमें धकारका प्रादुर्भाव होता है तृतीय
क्षणमें रकार अक्षरका तिरोभाव और धकारकी स्थिति
होती है एक अक्षरकी उत्पत्ति स्थिति नाश में तीन
क्षण गुजर जाते हैं इसी हिसाबसे रकारादि नौ वर्णों
के उत्पत्ति स्थिति नाश होनेमें यद्यपि सत्ताईस क्षण
गुजर जाते हैं तथापि कालकी गति बड़ी सूक्ष्म है रा-
धास्वामी मतवालोंके मनमें नहीं आ सकती उसी से
उन लालबुझक्कड़ों को भ्रम होजाता है कि हम राधा
स्वामी एकही नामका स्मरण करते हैं जो उनकी अ-
विद्या है क्योंकि राधास्वामी नाम परमार्थ से गधा
के सींग समान मिथ्या सिद्ध हो चुका है। पोथीवार्तिक
भा० १ पृ० ७ पं० ९ वीं से राधास्वामी को अकह
लिखा है सो भी झूठी दरोगहलफी है क्योंकि बाबा
लोग वाणीसे राधास्वामी शब्दको कहते हैं फिर उसको
अकह लिख मारते हैं क्योंकि शब्दही का नाम राधा-
स्वामी सिद्ध हुआ है जब उसको अकह कहें तो राधा
स्वामी नामका स्मरण न होना चाहिये यदि स्मरण होता
है तो राधास्वामी शब्दको अकह लिखना भी कुत्ता के
सींगका गपोड़ा है पोथी टिकोजमके पृ० ३७ पं० २

से लिखा है कि राधास्वामी कुल नेकियोंका भंडार है यह कूल भी मिथ्या है क्योंकि राधास्वामी शब्द है शब्द से नेकी बदी दोनों हो सकती है पोथी सन्तमत के टिकोशम पृ० ३४ पं० १ से लिखा है कि जब बाबू शिवदयासिंह जो कि राधास्वामी कहाते थे वह जब मरने लगे थे तब राय शालिग्राम जी को इशारे से कहते थे कि आप उपदेश दिया कीजिये इस कूलसे जाना जाता है कि जब राधास्वामी बाबू मरने लगा था उस वक्त बोल भी नहीं सकता था। इशारे करता था परन्तु अनुमान से यह भी ज्ञात हो सक्ता है कि बाबू मरने के वक्त इशारा भी नहीं करता था किन्तु मरने के वक्त बाबू को मृगी रोग ने गिफ्तार किया होगा बाबू के हाथ पैर हिलते होंगे उसी को राय शालिग्राम ने उपदेशका इशारा समझा होगा जैसे कि लालबुझक्कड़ मरा था तब उस के दांत निकल रहे हुए चेलोंने समझ लिया कि गुरू जी हंसते हैं वही चाल राय शालिग्राम वगैरहकी होगी। पोथी वार्त्तिक भा०१ पृ०६ पं० १० वीं से खुदा ही को राधास्वामी लिख मारा है सो भी बाबूकी अविद्या है क्योंकि मुसलमानोंके कुरान वगैरह में कहीं भी खुदाको राधास्वामी

नहीं लिखा राधा और स्वामी दो नामों से बाबू जी आधे स्त्री और आधे मनुष्य साबित होते हैं यहूदी की इञ्जीलमें शब्द हीको परमेश्वर लिखा है उससे ज्ञात होता है कि बाबू जी भी अपनेको शब्द मानके परमेश्वर कहाते थे। पोथी बा० भा० २ पृ० २६ पं० ५ वीं से लिखा है कि मालिक कहाता है कि गुरुद्वारे ही से मैं मिलूंगा निगुरे को मेरे दरबार में दखल न होगा बाबूका यह कूल भी मिथ्या है क्योंकि पोथी सार बचन राधा स्वामी नजम अर्थात् छन्द में जनवरी सन् १८८४ की छपी पृ० २ पं० ३ से लिखा है कि हजूर साहिबका कोई गुरू नहीं था और न किसी से उन्होंने उपदेश लिया है उसीकी पृ० ३ पं० १४ से लिखा है कि हजूर से हिन्दू मुसलमानों ईसाई जैनोंने उपदेश लिया था पृ० ५ पं० ७ पिछले वक्तोंमें यह राधास्वामी मत गुम होरहा था इत्यादि कूलोंकी कृपासे बाबू शिवदयालसिंहजी खुद ही निगुरे हो चुके उसी से मालिक के दरबारमें बाबूका दखल न होगा वही दुर्दशा बाबू के राय शालिग्रामादि चेलोंकी होगी क्योंकि वह निगुरेके चेले हैं। उसीको पृ० २ पं० ९ वीं से कहा है कि आजकलके गुरू भी लोगोंको पत्थर पानीमें लगा देते हैं

स ... नहीं हो सकते बाबूका यह रूल भी असंभव अन-र्थप्रतिपादक है क्योंकि सर्व गुरू बुरे नहीं हो सकते गुरू चेलोंको पत्थर पानीमें नहीं लगाते किन्तु अवतारोंकी मूर्त्ति द्वारा ईश्वरकी भक्ति ही को गुरू बतलाते हैं हां बाबू जी चेतनसे जड़ हो बैठे हैं उसी जड़ शब्दमें चेलों का विश्वास जमाते रहे हैं उससे भी बाबू जी झूठे हैं लक्षणसे गंगा शब्द लक्ष्यार्थ भी नित्य शुद्ध ब्रह्मचेतन हो सकता है क्योंकि वेदान्त रीतिसे सर्व शब्द लक्षणा-वृत्तिसे ब्रह्मको ही लखाते हैं। यदि बाबूकी मूर्त्ति को कोई हलक करे तो बाबू जी का कि राधास्वामी के चेले कहाते हैं उनको झट पत्थर पानी कागज स्याही भूल जावें ॥

उसी की पृ० २३ पं० १७ वीं से कहा है कि जो शब्दका रस चाहे वह एक वखत रोटी खावे बाबूका यह रूल भी धोखे से भरा है क्योंकि बहुतसे राधा-स्वामी मत वाले बाबू तीन २ वखत होटल में डबल रोटी चाबते हैं उससे बाबूओंको राधास्वामी रूपी शब्द का रस भी नहीं आ सकता किन्तु डबल रोटीका रस ही बाबू जीको आता है विद्याहीनों में राधास्वामी

मतवाले बाबूजी योगी कहाते हैं परन्तु रोगसे रेंगते जाते हुए मरते जाते हैं। उसीको पृ०२५ पं० ९वीं से प्रतिज्ञा लिखी है कि जो चेतनकी सेवा करता है वह चेतनको प्राप्त होता है और जो जड़की सेवा करता है वह जड़को हासिल करता है इस रूपरूपी तोपके गोलेसे भी राधास्वामी मतका गमोड़ारूपी जिस्म मर्दन हो रहा है क्योंकि राधास्वामी रूपी शब्द भी जड़ स्वरूप है उसी की उपासना सेवा राधास्वामी मत वाले करते हैं उससे उनको जड़ ही की प्राप्ति होगी। उसी की पृ० २९ पं० १ से० भी साबित किया है कि जो सन्तोंकी सेवा करेगा वह खुदा हो जावेगा बाबूका यह रूल भी झूंठी हलफ़ रोगों से भरा है क्योंकि इस रूलसे दूसरेकी तलाश नहीं हो सकती दूसरेकी तलाश न करने वाले वेदान्तियों को बाबू जी ने धोखा देने वाले लिखा हैं। उसी से बाबू खुद ही धोखा देने वाले हैं उसी की पृ० २४ पं०८४ से० लिखा है कि सन्त मालिकका शरीर है बाबूका यह लेख भी युक्ति के बरखिलाफ़ है क्योंकि राधास्वामी मतमें बाबू शिवदयालसिंह ही को राधास्वामी मत वालोंका मालिक कहा है और सन्त भी

राधास्वामी मतमें बाबू शिवदयालसिंह ही थे अपना शरीर आप होनेमें बाबू जी पर आत्म अय दोष अस-वार हो सकता है उसी का भाग २ पृ० ३६ पं० १२ से लिखा है कि सन्तोंकी अकालमूर्त्ति है इस रूलसे बाबू जी सन्तमूर्त्ति संयुक्त हो सकते हैं परन्तु मूर्त्ति शब्दका अर्थ कठिन जड़ पदार्थ है उसको अकाल लिखनेसे भी बाबू जी लालबुझक्कड़ हैं। उसीका भाग १ पृ० ११६प० १ से कहा है कि राधास्वामी नामको कुलका मालिक ने जाहर किया है यह रूल भी गपोड़ बाजी है क्योंकि राधा बाबूकी स्त्री थी उस स्त्रीके बापने राधाको जा-हर किया था हां अपने दुसरेका नाम कुलका मालिक रख देवें तो बाबूकी व्यवस्था हो सकती है परन्तु स्वामी नाम तो बाबू ने खुद ही रख लिया है अथवा राय शा-लिग्राम बाबू के मुख्य चेलेथे उनने बाबूको स्वामी का खिताब दिया होगा क्योंकि ॥

उष्ट्राणांच विवाहेषु गर्दभः स्वस्तिवाचकः ।
परस्परंप्रशंसन्ति अहोरूपमहोध्वनिः ॥
घंटभित्वा पटंछित्वा कृत्वा रासभरोहणम् ।
येनकेनप्रकाकारेण प्रसिद्धः पुरुषोभवेत् ॥

उसी का भा० १ पृ० ११७ पं० ६ वीं से लिखा है कि ब्रह्मा विष्णु महादेव वगैरःका दर्जा सन्तोंके दर्जेसे नीचा है सन्त भी राधास्वामीके आधीन हैं इन रूलों से बाबू जी ने पहिले ब्रह्मा विष्णु महादेव जी को अपने से नीच ठहराया है क्योंकि राधास्वामी मत में बाबू खुद ही सन्त कहाते हैं फिर उसके विरुद्ध सन्तों को राधास्वामी के आधीन लिख मारा उससे भी बाबू जी पर आत्माश्रय दोष चढ़ सक्ता है क्योंकि बाबू जी खुद ही सन्त हैं अपने आपको अपने आधीन लिखने से बाबू जी मूसलचन्द साबित होते हैं उसी की पृ० ५ पं० ७ वीं से कहा है कि जब तक त्रिकुटियों के परे न जाओ तब तक तुम्हारा भजन कोल्हू के बैल समान है इस रूल से बाबू शिवदयालसिंह का सर्वथा दिवाला निकल खड़ा हुआ है क्योंकि त्रिकुटि शब्द किसी योग ग्रन्थमें नहीं है हां त्रिकुटी शब्द तो योग शास्त्रमें आता है वेदान्तमें ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ध्याता ध्यान ध्येय प्रमाता प्रमाण प्रमेय अवगन्ता अवगति अवगन्तव्य स्मर्त्ता स्मृति स्मर्त्तव्य दृष्टा दृष्टि दृष्टव्य इत्यादि त्रिकुटियें लिखी हैं इन त्रिकुटियों के परे एक शुद्ध ब्रह्मचेतन ही

त्रिकाल अबोध है क्योंकि जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति तथा समाधि वगैः उस ब्रह्म चेतन में वस्तुतः गधा के सींग समान नास्ति हैं बाबू राधास्वामी राय शालिग्राम वगैरः भी उसब्रह्म चेतनमें कुत्ता के सींग समान नास्ति हैं उससे कोल्हू के बैल भी वही हैं उसी का भा० २ पृ० ३ पं० १४ से क्रोध को काल का चक्र कहा है इस रूल से बाबू खुद ही क्रोधी हैं क्योंकि उनने हिन्दूधर्म की झूठो निन्दा करी है विना क्रोधके नि-न्दा नहीं हो सकती॥

एक वार इलाहावादमें हम भी राधास्वामीमत वालोंकी सभा में गये थे वहां राधास्वामी मतको हमने खण्डन करडाला था तो वह क्रोधसे लड़नेको तैयार हुए थे इससे भी राधास्वामी मतवाले ही क्रोध चक्र में फंसे हैं उसीका भा०२पृ० ४१ पं० १८ वींसे सन्तों के क्रोधको उपकारका कारण कहा है यह भी बाबू की झूठी हलफदरोगी हैं उसी की पृ० ५२ पं०४ से लिखा कि निन्दा स्तुति दोनों से पाप होता है बाबू का यह रूल भी झूठा है क्योंकि स्तुति नाम सच्च का है सच्च बोलने से पाप नहीं हो सकता उसी की पृ० ७३ पं० ३

हिन्दू मुसलमान से दोनोंको अन्धे कहा है और लिखा है कि वह मन्दिर मस्जिदों का पूजन करते हैं बाबू का यह कूल भी भ्रान्तिमूलक है क्योंकि मन्दिर मस्जिदों में हिन्दु मुसलमान ईश्वर का भजन करते हैं हां राधास्वामी मतवाले बाबू जी अपने बंगलों में बैठे राधास्वामी इस जड़ शब्दका ध्यान धरते है उसीको पृ० ३० पं० ९ से कहा है कि जो सन्तोंके सामने आता है उस को राधास्वामी नाम ही को उपदेश करते हैं इस कूलसे भी राधास्वामी मतमें जड़ही का पूजन साबित हो चुका है राधास्वामीका बचन ३४ पृ० ४६ पं० २२वीं से लिखा है कि राधास्वामी अपनी दयासे कभी २ रस भी देते हैं इस कूल से हजूर राधास्वामी रस तो नहीं देते थे हां उच्छिष्ट भोजन तो राय शालिग्राम वगैरः चेलोंको चटाते थे पोथी वार्त्तिक भा० २ पृ० ९४ पं० १ से बाबूजी ने कहा है कि अवतार निगुरे और तृष्णाकी आग में जलते हैं बाबूका यह कूल भी झूठा है क्योंकि रामावतार के गुरु वशिष्ठजी और कृष्णावतारके गुरु दुर्वासाजी थे उनसे अवतार निगुरे नहीं

हो सके हां बाबू जी निगुरे थे रामावतारने लंका को जीत लिया और रावणके भाई विभीषणको ही लंकाका राज्य देदिया था उससे रामावतार तृष्णाकी अग्निमें नहीं जले कृष्णावतार ने कंस को मारके उसके बापको ही राज्य देदिया था उससे कृष्णावतार भी तृष्णा की अग्नि में नहीं जले किन्तु बाबू शिवदयाल सिंह ही मारे तृष्णा के नौकरी करते ही थे वही हाल राय शालिग्रामजी का था पोथी सन्तमत के टिकोजम पृष्ठ ४ पं० १ से लिखा है कि राधास्वामी मतके बिना दूसरे मतोंमें ज्ञान थोड़ा है इस कूलसे भी बाबू लाल-बुझक्कड़ हैं क्योंकि राधा स्वामीसे भिन्न वेदान्तमत में जितना ज्ञान है उससे हजारवां भाग भी राधास्वामी मत में ज्ञान नहीं क्योंकि—

(यस्मिन्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः। तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः) (योसावादित्ये पुरुषः सोसावहं) इत्यादि वेद मन्त्रोंमें ब्रह्म-ज्ञान भरा है राधा स्वामीके ग्रन्थोंमें एक भी ज्ञान का वाक्य नहीं देखा जाता। मतन के भेदों कर भेद नहीं

आत्मा में मत नाना दीखे सो तो बुद्धि की कल्पना। द्वितीयाद्वै भयं भवति । इत्यादि श्रुतियोंमें भी ज्ञान ही भरा है पोथी सार बचन राधा स्वामीकी छन्दोंमें जो कि सन् १८८४ में छपी है उस की पृ० ८०० पं० ११ वीं से साबित है कि बाबू शिवदयालसिंह जी जो कि राधास्वामी बने थे उनके चेले उसको हुक्का बहुत पिलाते थे फिर उसको दिशा फिराकत कराते थे उस रूल से ज्ञात होता है कि बाबू जी को हुक्का पीनेके बिना झाड़ा जंगल भी नहीं हो सकता था डाक्टरीसे हुक्केका पीना हानिकारक है जैसे नड़ी में हुक्केका धुआं जम-जाता है वैसे ही नाड़ियों में जम जाता है वीर्य छिन्न भिन्न होकर लघुशंका द्वारा निकल जाता है, कलेजा घबराने लगजाता है छाती में कमजोरपन और गोला सा हो जाता है खून बदल जाता माथेमें दर्द होता है आलस आता है इत्यादि दोष डाक्टरी से हुक्केमें सिद्ध होते हैं जो हानि गांजा और चरस पीने वाले की होती है वही हुक्का पीने वाले की होती है बाबू राधास्वामी हुक्के के नशे में गिरफ्तार रहता

था बस यही बाबू का ब्रह्मज्ञान था यदि हुक्का पीने वाले ही सन्त और हजूर हो जावें तो जितने हिन्दू मुसलमान वगैरः हुक्के गांजे चर्पी हैं उनसे बाबू का कुछ भी भेद नहीं होसक्ता बाबूको किताबोंसे साबित हो चुका है कि कुछ मुसलमान भी बाबू हजूरके चेले बने थे यदि यह ठीक है तो मुसलमानोंको इसलामियां किताबसे साबित है कि हुक्का पीने वाले को फिरिश्ते ले जाते हैं चूतड़ ऊपर और सिर नीचे करके हुक्का पीने वाले को टांग देते हैं उस के मलद्वार रूपी चिलम पर अंगारे रख देते हैं मूत्र द्वार रूपी नड़ी को हुक्का पीने वाले के मुंह में घुसेड़ देते हैं गुर्जे मारते हैं यदि हजूर बाबू जी उस इसलामियां किताब को भी देखलेते तो हुक्का पीनेका नाम तक भी कभी न लेते ॥

उसी किताब में लिखा है कि बाबू हजूरको तेल उबटना वगैरह उनके चेले लगाते थे स्नान कराते थे मैल उतारते थे धोती बदल के फिर हुक्का पिलानेका प्रारम्भ कर देते थे भोजन पान बीड़ी हजूर बाबू को खिलाते थे बाबू हजूरकी सीत प्रसादी को चेले हजम कर लेते थे इस कूल से साबित होता है कि हजूर

बाबू की उच्छिष्ट तक भी चेले हज़म करते जाते थे। परन्तु इस रूनको हम डाक्टरी विद्याके विरुद्ध मानि। कर चुके हैं ज्ञात होता है कि हजूर बाबूका शरीराभिमान नहीं छूटा था उसीकी पृ० ४२१ पं० ८ वीं से राम कृष्णादि ईश्वर के दश अवतारों को कालके आधीन और उनके भजन से लोगों को हटाना लिखा है। परन्तु निष्पक्ष और विचारवान् लोग बाबू के इस रूल को धोखे की टट्टी समझते हैं। उसीकी पृ० ४२५ पं० ९ से बाबू ने गायका गोबर और मूत्र पीने वालेको पशु कहा है परन्तु बाबू के माता पितादि गाय का मूत्र गोबर का पंचगव्य खाते थे। उस से भी बाबू पशुओं के पुत्र पशु हैं डाक्टरी से भी साबित है कि गाय के गोबर और मूत्र से अनेक प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं अपने चरणामृत जलका पीना हजूर बाबू ने कहा है जिस से कुछ फायदा नहीं होता बाबू हजूर ने पृ० ४४९ पं० २ से छन्द रचा है कि—

कर सतसंग काज किया पूरा, पापनसे मानों खाया धतूरा।

इस रूल से माना जाता है कि बाबू जी धतूरा भी खाते थे उसी से बाबू बुझक्कड़ का होश मारा

गया था कि जिससे बोलने का ज्ञान भी न रहा भला धतूरा खाने से कैसे पाप नष्ट हो सकता है किन्तु कभी नहीं बाबूजी किताबों से हम साबित कर चुके हैं हुजूर बाबू छन्द रचते हैं कि—

राधास्वामी पंथ चलाया राधास्वामी । राम न जाना कृष्ण न जानी । तुमको मेरे पियारे राधास्वामी ॥

बाबू की यह कविता वैसे है जैसे कि राजा भोज के समय एक लालबुझक्कड़ ने कविता वक्ष्यमाण रीति से रची थी ॥

तनन तनन तकवा तन्नाय । तेलीका बैल बैठ हिंसाय ॥
डगर चलन्ते तरकश बन्द । भोजराज तुम मूसलचन्द ॥

यदि बाबू हजूरजी को संतोंका संग होता तो पांच कोशोंका अभिमान छोड़कर यथार्थ स्वस्वरूपको जान के मुक्त पदको हासिल करलेते । हां हजूर चेलोंको जंठी उच्छिष्टें खिलाके प्लेग वगैरह रोगोंकी तरक्की तो जरूर करगए हैं ऐसे गप्पमतसे बची पोथी वार्त्तिक भा० २ पृ० ५ प० १ से कहा है कि अवतार वगैरह पहिले दूसरी तीसरी पांचवी मंजिल तक गये हैं धुर तक नहीं पहुंचे कोई राधास्वामी पदमें पहुंचे हैं यह भी

बाबूका झूंठा अभिमान है अब बाबू जी विद्याहीनों के समाने अवतारोंकी निन्दा न करते तो बाबूके जाल में एक भी मुर्गा न फंसता । उसीकी पृ० ९ प० १५ वींसे कहा है कि जो जहां पहुंचा है उसने उसीको खुदा परमेश्वर बतलाया है होश हवास उनके जाते रहे इस रूलरूपी तोपके गोले से भी राधास्वामी मतका गप्परूपी निशान उड़ रहा है क्योंकि बाबू जीने आकाशके गुण जड़ शब्दहीको परमेश्वर माना है शब्दके अर्थका ज्ञान बाबू जी को नहीं हुआ उसी की पृ० ११ वीं से लिखा है कि पहिले स्थान पर पहुंचने से सर्वशक्ति हासिल हो जाती है यह रूल भी धोखे की टट्टी है क्योंकि बाबू को मरण के वखत बोलने की शक्ति न रही थी सर्वथा होश हवाश नष्ट गये थे उसीकी पृ० २ पं० ४ से कहा है कि सच्च खण्ड निहायत ऊंचा और सन्तों का दरबार है उस को अब तक किसी सन्त ने नहीं खोला किन्तु राधास्वामी हीने खोला है इस रूल से भी बाबू जी लाल बुझक्कड़ जाने जाते हैं क्योंकि बाबू ने शब्द ही को ईश्वर माना है

सो बाबू जीके पहिले ईमामबोह भी शब्द ही को ईश्वर मान गए हैं उससे भी बाबूजी निहायत गपोड़-बाज हैं उसीको पृ० २३ पं० ६ वीं से लिखा है कि जब पांच तत्त्ववगैरहसे सुरत जुदा हो जाती है तो राधास्वामी पदमें जा पहुंचती है उसी को राधास्वामी मतमें पूरा साधु कहते हैं वहां ही सुरतों की मण्डलियां रहती है इस रूलसे भी बाबूजुभक्कड़ हैं क्योंकि शब्द ही को बाबूजी राधास्वामी पद साबित कर चुके हैं शब्दसे भिन्न राधास्वामी पद गधा के सींग समान नास्ति है उसीसे सुरतों की मण्डलियां भी नेस्तनाबूद हैं उसीको पृ० २४ पं० ५ वीं से कहा है कि दशवें द्वारके नीचे त्रिकुटि है उसीको ब्रह्म और ओंकार पद कहते हैं बाबूका यह रूल भी गप्प है क्योंकि ओंकारका अर्थ तो लक्षणासे शुद्ध ब्रह्मचेतन हो सकता है परन्तु बाबूजी शब्द ही ही को ब्रह्म वा परमेश्वर मान चुके हैं। पोथीवार्त्तिक भा० २पृ० ११० पं० २१ वीं से लिखा है कि आज कलके ज्ञानी वेदको पहिले और सन्तोंको पीछे बताते हैं यह उनकी भूल है क्योंकि जो सन्त वेदके कर्त्ताके भी कर्त्ता हैं उनकी इनको खबर ही नहीं जो वेद पढ़के सन्त-

बढ़ाते हैं वह इन सन्तोंके सेवकोंकी बराबरीभी नहीं कर सकते। इत्यादि कर्मोंसे बाबू शिवदयालसिंहने यहां तक गपोड़ा हांका है कि अपनेको वेदके कर्त्ता ईश्वरका भी कर्त्ता लिखमारा है क्योंकि राधास्वामी मत वालोंने आज कल बाबू शिवदयालसिंह ही को सन्त मान रक्खा है बाबूने वेदोंकी निहायत झूठी निन्दा लिखी॥

इसके प्रथम भागमें संक्षेपसे राधास्वामी मत का खण्डन किया है। विशेष खण्डन फिर कभी करेंगे जब राधास्वामी मतके ग्रन्थों में रामकृष्णादि अवतारों के अर्चा मूर्त्तिपूजा वगैरह की झूठी निन्दा न लिखी होती तो हम भी उसका खण्डन कभी न करते बाबू को मत चलानेका इख्तियार था। दूसरे मतोंकी बुराई करना बाबूका इख्तियार नहीं था किसीकी बुराई करना बृटिश आईनके भी बरखिलाफ हैत्यिमधिकम्॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥ य० अ० ३५ मं० १९॥

ओरेम्-शान्तिः शान्तिः